

قَلِيلًا مَّا تَوْمَنُونَ ۝۴۱ وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ ۝ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝۴۲

कितना कम यकीन रखते हो⁴⁵ और न किसी काहिन की बात⁴⁶ कितना कम ध्यान करते हो⁴⁷

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝۴۳ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۝۴۴

उस ने उतारा है जो सारे जहान का रब है और अगर वोह हम पर एक बात भी बना कर कहते⁴⁸

لَا خُدْنَا مِنْهُ بِالْيَبِينِ ۝۴۵ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝۴۶ فَمَا مِنْكُمْ

ज़रूर हम उन से ब कुव्वत बदला लेते फिर हम उन की रगे दिल काट देते⁴⁹ फिर तुम में कोई

مِّنْ أَحَدٍ عَنهُ حُجْرِينَ ۝۴۷ وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرَةٌ لِّلشَّاقِينَ ۝۴۸ وَإِنَّا

उन का बचाने वाला न होता और बेशक यह कुरआन डर वालों को नसीहत है और ज़रूर हम

لَنَعْلَمَنَّ أَن مِّنكُمْ مَّكَذِبِينَ ۝۴۹ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝۵۰ وَ

जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं और बेशक वोह काफ़ि़रों पर हसरत है⁵⁰ और

إِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝۵۱ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝۵۲

बेशक वोह यकीनी हक़ है⁵¹ तो ऐ महबूब तुम अपने अज़मत वाले रब की पाकी बोलो⁵²

﴿ اِيٰتِهَا ۲۴ ﴾ ﴿ سُوْرَةُ الْمُعٰرِجِ مَكِّيَّةٌ ۹ ﴾ ﴿ رُكُوْعَاتِهَا ۲ ﴾

* सूरए मअरिज मक्किय्या है, इस में चवालीस आयतें और दो रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اللّٰهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝۱ لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝۲ مِّنَ اللّٰهِ

एक मांगने वाला वोह अज़ाब मांगता है जो काफ़ि़रों पर होने वाला है उस का कोई टालने वाला नहीं² वोह होगा **اللّٰهُ** की

45 : बिल्कुल बे ईमान हो, इतना भी नहीं समझते कि न येह शे'र है न इस में शे'रियत की कोई बात पाई जाती है 46 : जैसा कि तुम में से बा'जे काफ़िर इस किताबे इलाही की निखत कहते हैं। 47 : न इस किताब की हिदायात को देखते हो न इस की ता'लीमों पर गौर करते हो कि इस में कैसी रूहानी ता'लीम है न इस की फ़साहतो बलागत और ए'जाजे बे मिसाली पर गौर करते हो जो येह समझो कि येह कलाम 48 : जो हम ने न फ़रमाई होती तो 49 : जिस के काटते ही मौत वाक़ेअ हो जाती है। 50 : कि वोह रोजे क़ियामत जब कुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और इस के इन्कार करने वालों और झुटलाने वालों का अज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अपसोस करेंगे और हसरत व नदामत में गिरिफ़्तार होंगे। 51 : कि इस में कोई शको शुबा नहीं। 52 : और उस का शुक्र करो कि उस ने तुम्हारी तरफ़ अपने इस कलामे जलील की वह्य फ़रमाई। 1 : सूरए मअरिज मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ, चवालीस 44 आयतें, दो सो चौबीस 224 कलिमे, नव सो उन्तीस 929 हर्फ़ हैं। 2 : शाने नुज़ूल : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने जब अहले मक्का को अज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह आपस में कहने लगे कि इस अज़ाब के मुस्तहक़ कौन लोग हैं और येह किन पर आएगा ? सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

ذِي الْمَعَارِجِ ٣ ۞ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ

तरफ़ से जो बुलन्दियों का मालिक है³ मलाएका और जिब्रील⁴ उस की बारगाह की तरफ़ उरूज करते हैं⁵ वोह अज़ाब उस दिन होगा

خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ٦ ۞ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَبِيلًا ٥ ۞ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ

जिस की मिक़दार पचास हज़ार बरस है⁶ तो तुम अच्छी तरह सब्र करो वोह उसे⁷ दूर

بَعِيدًا ٦ ۞ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ٧ ۞ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْهَيْلِ ٨ ۞ وَتَكُونُ

समझ रहे हैं⁸ और हम उसे नज़दीक देख रहे हैं⁹ जिस दिन आस्मान होगा जैसी गली चांदी और

الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ٩ ۞ وَلَا يَسْأَلُ حَيِّمٌ حَيِّيًا ١٠ ۞ يَبْصُرُونَهُمْ ٧ ۞ يُودُّ

पहाड़ ऐसे हलके हो जाएंगे जैसे ऊन¹⁰ और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा¹¹ होंगे उन्हें देखते हुए¹² मुजरिम¹³

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ١١ ۞ وَصَاحِبَتِهِ وَ

आरजू करेगा काश इस दिन के अज़ाब से छुटने के बदले में दे दे अपने बेटे और अपनी जोरू और

أَخِيهِ ١٢ ۞ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ١٣ ۞ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا لَا شَئ

अपना भाई और अपना कुम्बा जिस में उस की जगह है और जितने ज़मीन में हैं सब फिर यह बदला

يُنْجِيهِ ١٣ ۞ كَلَّا ۞ إِنَّهَا لَظَى ١٤ ۞ نَرَاةً لِّلشَّوْىِ ١٥ ۞ تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَو

देना उसे बचा ले हरगिज़ नहीं¹⁴ वोह तो भड़कती आग है खाल उतार लेने वाली बुला रही है¹⁵ उस को जिस ने पीठ दी और

تَوَلَّى ١٦ ۞ وَجَمَعَ فَأَوْعَى ١٧ ۞ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ١٨ ۞ إِذَا مَسَّهُ

मुंह फेरा¹⁶ और जोड़ कर सैत रखा (महफूज़ कर रखा)¹⁷ बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा बे सब्रा हरीस जब उसे बुराई

से पूछे, तो उन्होंने ने हज़ूर सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से दरयाफ्त किया, इस पर येह आयतें नाज़िल हुई और हज़ूर

से सुवाल करने वाला नज़्र बिन हारिस था, उस ने दुआ की थी कि या रब ! अगर येह कुरआन हक़ हो और तेरा कलाम हो तो हमारे ऊपर

आस्मान से पथर बरसा या दर्दनाक अज़ाब भेज, इन आयतों में इशार्द फ़रमाया गया कि काफ़िर तलब करें या न करें अज़ाब जो उन के लिये

मुक़द्दर है ज़रूर आना है, उसे कोई टाल नहीं सकता 3 : या'नी आस्मानों का । 4 : जो फ़िरिशतों में मख़सूस फ़ज़्तो शरफ़ रखते हैं 5 : या'नी

उस मक़ामे कुर्ब की तरफ़ जो आस्मान में उस के अवामिर का जाए नुज़ूल है । 6 : वोह रोजे क़ियामत है जिस के शदाइद काफ़िरो की निस्बत

तो इतने दराज़ होंगे और मोमिन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से भी सुबुक तर (कमतर) होगा । 7 : या'नी अज़ाब को 8 : और येह खयाल करते

हैं कि वाक़ेअ होने वाला ही नहीं 9 : कि ज़रूर होने वाला है । 10 : और हवा में उड़ते फिरेंगे । 11 : हर एक को अपनी ही पड़ी होगी

12 : कि एक दूसरे को पहचानेंगे लेकिन अपने हाल में ऐसे मुब्तला होंगे कि न उन से हाल पूछेंगे न बात कर सकेंगे । 13 : या'नी काफ़िर 14 :

येह कुछ उस के काम न आएगा और किसी तरह वोह अज़ाब से बच न सकेगा 15 : नाम ले ले कर कि ऐ काफ़िर मेरे पास आ ऐ

मुनाफ़िक़ ! मेरे पास आ । 16 : हक़ के क़बूल करने और ईमान लाने से । 17 : माल को और उस के हुकूके वाजिबा अदा न किये ।

الشُّرُجُورُوعًا ۲۰ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۲۱ إِلَّا الْبُصَلِينَ ۲۲

पहुंचे¹⁸ तो सख्त घबराने वाला और जब भलाई पहुंचे¹⁹ तो रोक रखने वाला²⁰ मगर नमाजी

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۲۳ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ

जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं²¹ और वोह जिन के माल में एक मा'लूम

مَعْلُومٌ ۲۴ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۲۵ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِهِمْ

हक है²² उस के लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो महरूम रहे²³ और वोह जो इन्साफ़ का दिन सच

الَّذِينَ ۲۶ وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۲۷ إِنَّ عَذَابَ

जानते हैं²⁴ और वोह जो अपने रब के अज़ाब से डर रहे हैं बेशक उन के

رَبِّهِمْ غَيْرِ مَأْمُونٍ ۲۸ وَالَّذِينَ هُمْ لِغُرُوجِهِمْ حَفِظُونَ ۲۹ إِلَّا عَلَى

रब का अज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं²⁵ और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करते हैं मगर अपनी

أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۳۰ فَمَنْ ابْتغى

बीबियों या अपने हाथ के माल कनीजों से कि इन पर कुछ मलामत नहीं तो जो इन दो²⁶

وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْعَدُونَ ۳۱ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

के सिवा और चाहे वोही हद से बढ़ने वाले हैं²⁷ और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अहद की

رَاعُونَ ۳۲ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ۳۳ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى

हिफाज़त करते हैं²⁸ और वोह जो अपनी गवाहियों पर काइम हैं²⁹ और वोह जो

18 : तंगदस्ती व बीमारी वगैरा की 19 : दौलत मन्दी व माल 20 : या'नी इन्सान की हालत येह है कि उसे कोई ना गवार हालत पेश आती है तो उस पर सब्र नहीं करता और जब माल मिलता है तो उस को खर्च नहीं करता। 21 : कि फ़राइजे पन्जगाना को उन के अवकात में पाबन्दी से अदा करते हैं या'नी मोमिन हैं 22 : मुराद इस से ज़कात है जिस की मिकदार मा'लूम है या वोह सदका जो आदमी अपने नफ़स पर मुअय्यन करे तो उसे मुअय्यन अवकात में अदा किया करे। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि सदकाते मुस्तहब्बा के लिये अपनी तरफ़ से वक़्त मुअय्यन करना शरअ में जाइज़ और काबिले मदह है। 23 : या'नी दोनों किस्म के मोहताजों को दे, उन्हें भी जो हाज़त के वक़्त सुवाल करते हैं और उन्हें भी जो शर्म से सुवाल नहीं करते और उन की मोहताजी ज़ाहिर नहीं होती। 24 : और मरने के बा'द उठने और हशरो नशर व जज़ा व क़ियामत सब पर ईमान रखते हैं। 25 : चाहे आदमी कितना ही नेक पारसा कसरीरुत्ताअत वल इबादत हो मगर उसे अज़ाबे इलाही से बे ख़ौफ़ होना न चाहिये। 26 : या'नी जौजात व मम्तूकात 27 : कि हलाल से हराम की तरफ़ तजावुज़ करते हैं। **मस्अला** : इस आयत से मुतआ, लिवातत, जानवरों के साथ क़ज़ाए शहवत और हाथ से इस्तिम्ना की हुरमत साबित होती है। 28 : शरई अमानतों की भी और बन्दों की अमानतों की भी और खल्क के साथ जो अहद हैं उन की भी और हक़ के जो अहद हैं उन की भी, नज़्रें और क़समें भी इस में दाख़िल हैं। 29 : सिद्को इन्साफ़ के साथ, न उस में रिश्तेदारी का पास करते हैं न ज़बर दस्त को कमजोर पर तरजीह देते हैं न किसी साहिबे हक़ का तलफ़े हक़ गवार करते हैं।

صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٣﴾ أُولَئِكَ فِي جَنَّةٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾ فَسَالِ الَّذِينَ

अपनी नमाज़ की मुहाफ़ज़त करते हैं³⁰ यह हैं जिन का बाग़ों में ए'जाज़ होगा³¹ तो उन काफ़ि़रों

كَفَرُوا وَقَبِلْتَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

को क्या हुआ तुम्हारी तरफ़ तेज़ निगाह से देखते हैं³² दहने और बाएं गुरौह के गुरौह

أَيُّطَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةً نَّعِيمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ

क्या उन में हर शख़्स यह तमअ करता है कि³³ चैन के बाग़ में दाख़िल किया जाए हरगिज़ नहीं बेशक हम ने उन्हें उस चीज़

مِّمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِرُونَ ﴿٤٠﴾

से बनाया जिसे जानते हैं³⁴ तो मुझे क़सम है उस की जो सब पूरबों सब पश्चिमों का मालिक है³⁵ कि ज़रूर हम कादिर हैं

عَلَىٰ أَنْ تُبَدَّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ﴿٤١﴾ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤٢﴾ فَذَرَاهُمْ يَخُوضُوا

कि उन से अच्छे बदल दें³⁶ और हम से कोई निकल कर नहीं जा सकता³⁷ तो उन्हें छोड़ दो उन की बेहूदगियों में पड़े

وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلْقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ يَخْرُجُونَ

और खेलते हुए यहां तक कि अपने उस³⁸ दिन से मिलें जिस का उन्हें वा'दा दिया जाता है जिस दिन क़ब्रों से

مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَانَتْهُمْ إِلَىٰ نُصْبٍ يُؤْفَضُونَ ﴿٤٤﴾ خَاشِعَةً

निकलेंगे झपटते हुए³⁹ गोया वोह निशानों की तरफ़ लपक रहे हैं⁴⁰ आंखें

أَبْصَارُهُمْ تَرَاهُمْ ذَلَّةً ﴿٤٥﴾ ذَلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٦﴾

नीची किये हुए उन पर ज़िल्लत सुवार यह है उन का वोह दिन⁴¹ जिस का उन से वा'दा था⁴²

30 : नमाज़ का ज़िक्र मुक़रर फ़रमाया गया इस में यह इज़हार है कि नमाज़ बहुत अहम है या यह कि एक जगह फ़राज़ मुराद हैं दूसरी जगह नवाफ़िल और हिफ़ाज़त से मुराद यह है कि इस के अरकान और वाजिबात और सुन्नतों और मुस्तहब्बात को कामिल तौर पर अदा करते हैं । 31 : बिहिश्त के । 32 शाने नुज़ूल : यह आयत कुफ़्फ़ार की उस जमाअत के हक़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) के गिर्द हल्के बांध कर गुरौह के गुरौह जम्अ होते थे और आप का कलामे मुबारक सुनते और उस को झुटलाते और इस्तिहज़ा करते और कहते कि अगर यह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे जैसा कि मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) फ़रमाते हैं तो हम ज़रूर इन से पहले उस में दाख़िल होंगे, उन के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि उन काफ़ि़रों का क्या हाल है कि आप के पास बैठते भी हैं और गरदनें उठा उठा कर देखते भी हैं फिर भी जो आप से सुनते हैं उस से नफ़अ नहीं उठाते । 33 : ईमान वालों की तरह 34 : या'नी नुत्फ़े से, जैसे सब आदमियों को पैदा किया तो इस सबब से कोई जन्नत में दाख़िल न होगा, जन्नत में दाख़िल होना ईमान पर मौकूफ़ है । 35 : या'नी आफ़ताब के हर जाए तुलूअ और हर जाए गुरूब का या हर हर सितारे के मशरि़को मगरिब का, मक़सद अपनी रुबूबिय्यत की क़सम याद फ़रमाना है । 36 : इस तरह कि उन्हें हलाक कर दें और बजाए उन के अपनी फ़रमां बरदार मख़्लूक़ पैदा करें 37 : और हमारी कुदरत के इहाते से बाहर नहीं हो सकता 38 : अज़ाब के 39 : महशर की तरफ़ 40 : जैसे झन्डे वाले अपने झन्डे की तरफ़ दौड़ते हैं 41 : या'नी रोज़े क़ियामत 42 : दुन्या में और वोह इस को झुटलाते थे ।